"पुस्तकालय सूचना विज्ञान के स्त्रोत"

16

ज्ञान प्रकाश*

आधुनिक समाज को सूचना समाज की संज्ञा दी जाती है। आज पूरा विश्व अपनी प्रगति एवं विकास के लिए चेतन अथवा अचेतन रूप से सूचना की दिशा में अग्रसर हो रहा है। सूचना राष्ट्रीय विकास का एक अनिवार्य स्त्रोत ऊभर कर सामने आया है जो समाज की प्रमुख आवश्यकताओं–शिक्षा, अनुसंधान एवं विकास, आर्थिक संपन्नता, सामाजिक, औद्योगिक विकास, प्रौद्योगिक विकास आदि विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति और विकास हेतु विविधि प्रकार की सूचनाओं की आवश्यकता होती है।

सूचना स्त्रोत का अर्थः–

सूचना उस जानकारी या विशिष्ट ज्ञान को कहते हैं जो किसी विशिष्ट विषय, तथ्य या घटना से संबंधित होती है। इसके अलावा सूचना उपयोगिता की दृष्टि से संप्रेषणीय भी होनी चाहिए। स्त्रोत से अभिप्राय सूचना या संदर्भ की प्राप्ति के माध्यम से होता है। अतः सूचना या संदर्भ स्त्रोत का अर्थ सूचना उपलब्ध कराने वाली सामग्री से है।

दूसरे शब्दों में सूचना स्त्रोत ज्ञान जगत के किसी भी विषय से संबंधित हो सकती है और उनका सीमांकन नहीं किया जा सकता। चूंकि सूचना स्त्रोत में विविधता का समावेश होता है। अतः इसे प्राप्त करने के लिए यह जरूरी नहीं कि स्त्रोत केवल जीवित रूप में ही हो, ये स्त्रोत निर्जीव भी हो सकते हैं। यह निर्भर करता है कि सूचना को प्राप्त करने वाला लक्ष्य किस प्रकृति का है और किस वातावरण में उसका निर्देशन और संचालन हो रहा है?

विभिन्न प्रकार की सूचना को तुरंत प्राप्त कराने में सूचना स्त्रोतों का विशेष महत्व है। सूचना स्त्रोतों का तात्पर्य ऐसे स्त्रोतों अथवा प्रलेखों से (Documents) है, जो संबंधित विषय क्षेत्र की सूचना को विस्तृत रूप से प्रस्तुत कर ज्ञान के विकास का कार्य करती है।

सूचना स्त्रोतों को पाठ्य–पुस्तकों की भांति आरंभ से अंत तक नहीं पढ़ा जाता है। इनका उपयोग किसी विशिष्ट सूचना की जानकारी प्राप्त करने हेतु ही किया जाता है। सामान्यतः सूचना स्त्रोतों का उपयोग पुस्तकालय तक ही सीमित है। इनकी सहायता से विभिन्न भाषाओं और विभिन्न राष्ट्रों में बिखरे हुए आंकड़ों और सूचनाओं को सुव्यवस्थित एवं सुनिश्चित क्रमानुसार उपयोगकर्ताओं को सुलभ कराया जाता है।

सूचना स्त्रोत की विशेषताएंः–

1. यह पाठ्य पुस्तकों से भिन्न होती है।
2. यह पुस्तकालय में बैठकर प्रयोग की जाती है।
3. इनका उपयोग जटिल एवं लोचदार माहौल में किया जाता है।
4. स्त्रोतों का उपयोग विशिष्ट सूचना प्राप्त करने के लिए होता है।

*****पुस्तकालायध्यक्ष , राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, ज़िला सिरमौर (हि. प्र.)*

5. सूचना शोध कार्यों को पूर्ण करने में सहायक मानी जाती है।
6. सूचना ज्ञान विस्फोट का अंग मानी जाती है।

सूचना के स्त्रोतः–

सूचना के स्त्रोत वस्तुतः परंपरागत रूप में ज्यादा चर्चित हैं। परंपरागत रूपों में पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचार पत्र आदि सम्मिलित हैं, लेकिन इनकी संख्या, स्वरूपों एवं आकारों में निरंतर वृद्धि होती जा रही है।

इसके साथ ही सूचना के आधुनिक स्त्रोतों का विकास भी हो रहा है, जिसके अंर्तगत इंटरनेट इत्यादि आते हैं। आधुनिक स्त्रोतों ने मनुष्य की सूचना तक पहुंचको आसान बना दिया है।

सूचना की उपलब्धि होने की दृष्टि से संदर्भ स्त्रोतों को डॉ. एस. आर रंगानाथा ने तीन भागों में वर्गीकृत किया है।

1. परंपरागत स्त्रोत
2. नव–परंपरागत स्त्रोत
3. अपरंपरागत स्त्रोत

परंपरागत स्त्रोतः–

परंपरागत स्त्रोत के रूप में वे सभी सामग्री आती है जिनमें तकनीकी का इस्तेमाल कम होता है और आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। कागज व मुद्रण कला के अविष्कार से पूर्व चर्म, भोज–पत्र, ताड़पत्र पर लिखित ग्रंथ हस्तलिखित हुआ करते थे। इस श्रेणी में पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाएं आदि शामिल की जाती हैं। चूंकि इनका इस्तेमाल काफी समय पूर्व से हो रहा है और वर्तमान में भी उनकी उपयोगिता है, अतः ये परंपरागत स्त्रोत कहलाते हैं।

परंपरागत स्त्रोतों में पत्थरों पर लिखे जाने वाले अभिलेख ताम्र पत्र, कबूतरों द्वारा पत्रों का भेजना आदि शामिल किए जाते हैं। परंपरागत स्त्रोत साधारण तथा मूल आकार में पुनरोत्पादित किए जा सकते हैं तथा उस रूप में भी वह मूल स्त्रोत की श्रेणी में ही रखा जाएगा।

डॉ. एस. आर. रंगानाथन ने परंपरागत स्त्रोतों को उसमें निहित ज्ञान तथा उसे व्यक्त करने के स्तर के अनुसार निम्न श्रेणियों में विभाजित किया है।

1. मौलिक स्तर
2. सामान्य जन स्तर
3. शोध स्तर
4. प्रारंभिक स्तर
5. प्रतिवेदनात्मक स्तर
6. व्यवस्थापकीय स्तर

डॉ. रंगानाथन ने परंपरागत स्त्रोतों को भी तीन श्रेणियों में विभाजित किया है–

(1) ग्रंथ

(2) पत्रिकाएं

(3) मानचित्र।

ग्रंथ स्त्रोत की सबसे अधिक प्रचलित श्रेणी है। इस श्रेणी में विचारों में निरंतरता होती है, साथ ही विषय पर लेखकों के विचारों का संग्रह होता है। इसी तरह पत्रिकाओं के माध्यम से नवीन विचारों, शोधों एवं अविष्कारों को बिना समय विताए पाठकों तक पहुंचाया जाता है। मानचित्रों को भी परंपरागत स्त्रोतों की श्रेणी में रखा है, क्योंकि इनका आकार एवं परिमाण साध ाारण होता है।

नव–परंपरागत स्त्रोतः–

इस प्रकार के प्रलेखों के अंतर्गत प्रकृति विज्ञान के अंतर्गत आने वाले मानकों, एकस्व तथा समाज विज्ञान में समाचारों की कतरनें तथा रसायन विज्ञान में परिसूत्र इत्यादि आते हैं। डॉ. रंगानाथन ने नव–परंपरागत प्रलेखों को निम्नलिखित चार भागों में विभाजित किया हैः–

अपरंपरागत स्त्रोतः–

प्रलेखों को ऐसा रूप जो परंपरागत व अपरंपरागत प्रलेखों से भिन्न हो तथा उसमें विचारों का अभिलेखन वैज्ञानिक विधियों द्वारा किया जाता हो, तो ऐसे प्रलेखों को अपरंपरागत प्रलेख कहते हैं। इन प्रलेखों को भी पांच भागों में विभाजित किया जा सकता हैः–

1. **सूक्ष्म प्रति**–प्रिटिंग प्रेस के अविष्कार से प्रलेखों के संग्रह हेतु स्थान की बड़ी समस्या आने लगी। इसी समस्या के समाधान हेतु सूक्ष्म प्रतिलिपिकरण की नवीन विधियों का अविष्कार किया गया। इन विधियों की सहायता से अधिक सूचना को कम स्थान एकत्रित किया जा सकता है।

2. **श्रव्य स्त्रोत**–पुराने समय में ध्वनि के अभिलेखों का उपयोग संगीतात्मक अभिलेख के रूप में किया जाता था, लेकिन वर्तमान समय में श्रव्य प्रलेखों का उयोग सूचना प्राप्त करने हेतु भी किया जाने लगा है।

3. **दृश्य स्त्रोत**–वर्तमान समय में सूचना का अधिक से अधिक से अधिक उपयोग हो, इस हेतु दृश्य प्रलेखों का उपयोग किया जाने लगा है। इस प्रकार के प्रलेखों का उपयोग निरक्षरों को पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करने हेतु भी किया जाता है।

4. **श्रव्य–दृश्य स्त्रोत**–द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद शिक्षा के क्षेत्र में वृत चित्रों का उपयोग अधिकाध िाक मात्रा में होने लगा। यह प्रलेख निरक्षर क्षेत्रों के लिए ही नहीं बल्कि साक्षर लोगों के लिए भी सूचना संचार का महत्वपूर्ण माध्यम है। प्रलेख स्मरण शक्ति को समृद्ध बनाने एवं बुद्धि को तीक्षण करने वाले प्रमुख साधन हैं और यह बृहद् और सूक्ष्म प्रलेखों के रूप में मिलने लगे हैं।

5. **अनु–स्त्रोत**– इन प्रलेखों का निर्माण प्रत्यक्षतः मानवीय मस्तिश्क की मध्यस्थता के बिना और इतनी तीव्र गति से होता है कि दृश्य–घटना का रूपांतरण मानवीय मस्तिष्क के विचारों के रूप में नहीं हो पाता। अनुप्रलेख के उदाहरण यंत्र प्रौद्योगिकी, फोटोग्राफी, राडार तथा अन्य

इसी प्रकार के प्रलेख आते हैं। इस प्रकार के प्रलेखों का महत्व इसलिए अधिक होता है कि ये विभिन्न प्रकार की घटनाओं का स्थाई अभिलेखन करते हैं, जोकि प्रेक्षकों की व्यक्ति परक त्रुटियों से रहित होते हैं।

'ग्रोगन' ने अपनी पुस्तक "विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी" में स्त्रोतों का वर्गीकरण उनमें निहित ज्ञान एवं सूचना संबंधित गुणों के आधार पर निम्नलिखित तीन प्रकार क स्त्रोतों द्वारा किया हैः–

(1) प्राथमिक स्त्रोत

(2) द्वितीयक स्त्रोत

(3) तृतीयक स्त्रोत

प्राथमिक स्त्रोतः–

ऐसी सूचना जो प्रथम दृष्टया प्रकाशित होती है, उसे प्राथमिक स्त्रोत कहते हैं। प्राथमिक सत्रोत प्रथम निरीक्षण के निष्कर्ष पर भी आधारित होते हैं। ये स्त्रोत व्यापक रूप में बिखरे एवं असतत् तथा असंगठित होते हैं। इसमें निहित सूचना वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान की मुख्य धारा से समयोजित नहीं होती है। इस प्रकार के स्त्रोतों में पत्रिकाओं, शोध प्रतिवेदनों, सम्मेलन–कार्यवाहियों, एसस्व, मानक, औद्योगिक व व्यवसायिक साहित्य, शोध प्रबंध एवं अन्य अप्रकाशित स्त्रोतों को शामिल किया जाता है।

1. पत्रिकाएं– पत्रिकाओं को प्राथमिक स्त्रोतों में बहुत महत्व दिया जाता है। इसमें सामान्यतया मौलिक लेख ही प्रकाशित किए जाते हैं। पत्रिकाएं महत्वपूर्ण सूचनाओं को स्त्रोत होती है। अक्सर अखबार में छपने वाली बेवजह की खबरों की अपेक्षा पत्रिकाओं में महत्वपूर्ण सूचाएं उपलब्ध रहती हैं। पत्रिकाएं सामान्यतया साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्ध–वार्षिक एवं वार्षिक रूप में प्रकाशित होती हैं।

2. एकस्व द्वारा वैज्ञानिक, इंजीनिय, रचनाकार, निर्माता, प्रणेता आदि को उसके कार्यों या आविष्कारों के निश्चित समय के लिए निर्माण करने, बेचने या खरीदने का अधिकार दिया जाता है। इसका इस्तेमाल कई दृष्टिकोंणों से किया जाता है।

3. अप्रकाशित स्त्रोत– में सूचना के प्राथमिक स्त्रोतों का प्रतिनिधित्व करते हैं लेकिन चर्चा में कम रहने के कारण पत्र–पत्रिकाओं की तरह कम मशहूर होते हैं। इनके अंतर्गत लैटर्स, कंपनी फाइल्स, हस्तलिखित पुस्तिकाएं एवं मेमोरण्डम इत्यादि शामिल होते हैं।

4. शोध प्रबंधन–इसमें किसी विशिष्ट विषय में किए गए मौलिक कार्यों का अभिलेख होता है इसमें विश्व विद्यालयों में स्नातकोत्तर व उच्च अध्ययनरत छात्रों की योग्यता की जांच के लिए शोध प्रबंध की सहायता ली जाती है। प्रत्येक लघु शोध तथा शोध प्रबंध किसी विशिष्ट विशय संबंधित नए विचारों से संबंधित होते हैं। शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य उस विषय से संबंधित सभी शोध पद्धति में, शोधकर्ता की निपुणता को परखना है। इन प्रबंधों के कुछ भाग विभिन्न लेखों के रूप में पत्रिकाओं, सम्मेलन कार्यवाही आदि के रूप में प्रकाशित होते हैं, जो शोध प्रबंध ा के महत्व को दर्शाते हैं।

5. शोध प्रतिवेदन– ये विद्वत स्त्रोत होते हैं इसमें वर्णित सूचना किसी विषय पर प्रमाणिक व विस्तृत तथा अधिक मौलिक प्रकृति की होती है। वर्तमान समय में यह प्राथमिक स्त्रोतों की श्रेणी के अंतर्गत एक सशक्त माध्यम बना हुआ है।

सम्मेलन कार्यवाही–

सम्मेलनों, संगोष्ठियों आदि में पढ़े गए या एकत्रित किए गए स्त्रोत प्राथमिक स्त्रोतों की श्रेणी में शामिल किए जाते हैं। ये स्त्रोत पर्याप्त परिचर्चा एवं वाद–विवाद के परिणाम स्वरूप चर्चा में आते हैं। ये स्त्रोत वैज्ञानिक तथा तकनीकी सूचना–संचार में बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण है।

6. औद्योगिक एवं व्यावसायिक साहित्य– इस प्रकार के साहित्य लाभ की कीमत पर कार्य करते हैं। यद्यपि उनका प्रकाषन पूरी तरह विभिन्न औद्योगिक संस्थानों के लिए प्रचार माध्यम का कार्य करता है। इस प्रकार के स्त्रोतों में संस्था पत्रिकाएं प्रमुख होती हैं।

द्वितीयक स्त्रोतः–

ये संदर्भ एवं सूचना के वे स्त्रोत होते हैं, जिनमें मौलिक जानकारी नहीं होती, बल्कि इन्हें मौलिक स्त्रोतों में दी गई जानकारी के आधार पर योजनावद्ध तरीके से तैयार किया जाता है। ये मौलिक स्त्रोतों का संदर्भ प्रस्तुत करते हैं। द्वितीयक स्त्रोतों में सूचना संक्षिप्त तथा सुसंगठित होती है, ये मौलिक स्त्रोत के पश्चात दृष्टिगोचर होते हैं। प्रायः मौलिक स्त्रोतों से प्रत्यक्ष रूप से सूचना सामग्री को प्राप्त करना सरल नहीं होता है।

अतः द्वितीयक स्त्रोतों का अवलोकन पहले करना पड़ता है, जिससे मौलिक स्त्रोतों के उपयोग करने का मार्गदर्शन मिलता है। वे इस प्रकार से हैंः– शोध पत्रिकाएं, अनुक्रमणिका, सारांशकरण पत्रिका, वाड़गमय सूची, समीक्षा प्रबंध–विनिबंध, विश्वकोश, शब्दकोश, हस्त पुस्तिका और आलोचनात्मक तालिका आदि।

1. सारकरण एवं अनुक्रमणीकरण पत्रिकाएंः–

ये सूचना के द्वितीयक स्त्रोत के रूप में विश्लेषित किए जाते हैं, इस तरह के स्त्रोत तब कारगर होते हैं, जब तकनीकी गतिविधियों की वजह से संपूर्ण साहित्य के बारे में जानकारी नहीं हो जाती। ये स्त्रोत आम पाठकों को उनकी आवश्यकता का साहित्य प्रदान करने मे सहयोग देते हैं।

सारकरण पत्रिकाएं जहां वैज्ञानिकों को उसके विषय में नवीनतम वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति एवं विकास के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान करते हैं, वहीं अनुक्रमणीकरण पत्रिका किसी विशिष्ट विषय, क्षेत्र ज्ञाने से संबंधित स्त्रोतों की व्यवस्थित सूची है। उदाहरण स्वरूप– इण्डियन प्रेस इण्डेक्स, इण्डियन सांइस एब्सट्रेक्ट इण्डेक्स इण्डिया, एप्लॉयड सांइस एण्ड टेक्नोलॉजी इण्डेक्स।

2. प्रगति समीक्षाः–

द्वितीयक स्त्रोतों में प्रगति समीक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अन्य संसाधनों या सूचना स्त्रोतों में तत्कालीन शोध के समय की गतिविधि का ही वर्णन होता है,

किन्तु प्रगति समीक्षा में पूरे तथ्य का निचोड़ शामिल होता है। इनकी सहायता से विषय विशेष पर हुई प्रगति की जानकारी वैज्ञानिकों को शीघ्रता पूर्वक मिल जाती है। इस प्रकार के स्त्रोतों में प्रोग्रेस रिव्यु ऑफ वायोकेमेस्ट्री, प्रोग्रेस इंन नेचुरल सांइस (न्यूयॉर्क) आदि को सम्मिलित किया जाता है।

3. संदर्भ ग्रंथः–

संदर्भ ग्रंथ से तात्पर्य किसी तथ्य, घटना, ज्ञान, सूचना के स्पष्टीकरण, पुष्टीकरण, प्राप्ति के लिए प्रयुक्त ग्रंथ जिसमें विषय व विचारों के क्रम में तारतम्य न हो तथा जिनका अध ययन आद्योपांत न किया जाए, बल्कि जिनका उपयोग मात्र किसी विशिष्ट सूचना की प्राप्ति के लिए किया जाए उसे संदर्भ ग्रंथ कहते हैं। ये ग्रंथ हैंः–विश्वकोश, शब्दकोश, हस्त पुस्तिका, तालिकाएं, विशय ग्रंथ, प्रबंध, निविबंद्ध पाठ्यपुस्तकें आदि।

तृतीय स्त्रोतः–

मौलिक एवं द्वितीय स्त्रोतों से छनकर सूचना तृतीयक स्त्रोतों तक पहुंचती है। अतः यह कहा जा सकता है कि जिन स्त्रोतों को मौलिक एवं द्वितीयक सूचना स्त्रोतों से सूचना प्राप्त करने में सहायकता मिलती है, वे तृतीयक स्त्रोत कहलाते हैं। तृतीयक स्त्रोतों का मुख्य कार्य एवं उद्देश्य मौलिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों में निहित सूचना की प्राप्ति में सहायता करना है। इन स्त्रोतों में विषय का ज्ञान नहीं होता है, बल्कि इनसे संबंधित स्त्रोतों का संकेत मिलता है, ज्ञान के विशाल भण्डार एवं निरंतर वृद्धि के कारण तृतीयक स्त्रोतों का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है।

इन स्त्रोतों में साहित्यिक मार्ग दर्शिकाएं, निर्देशिा, वार्षिकी शोध, प्रगति सूची एवं ग्रंथ सूची को शामिल किया जाता है। क्योकि वर्तमान समय में साहित्य एवं ज्ञान का प्रसार इतनी तेज गति से प्रकाशित हो रहा है कि आम पाठक को अपनी आवश्यकता की सूचना प्राप्त करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

इन समस्याओुं के समाधान हेतु साहित्यिक मार्ग दर्शिकाओं का प्रकाशन आरंभ हुआ है। साहित्यिक मार्ग दर्शिकाओं के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैंः–

1. निर्देशिकाः– यह ऐसी सूची होती है, जो विभिन्न प्रकार के पाठकों की सूचनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। इसमें विभिन्न प्रकार की सूचनाओं का समावेश होता है, चाहे वह उत्पाद हो या आदमी, उससे जुड़ी समस्त जानकारी निर्देशिका में रहती है। ये तीन प्रकार की होती हैः–

1. औद्योगिक निर्देशिकाएं
2. वैज्ञानिक एवं तकनीकी निर्देशिकाएं
3. वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगठनों की निर्देशिकाएं

2. वार्षिकीः–

इस प्रकार के प्रकाशन एक निश्चित अवधि में प्रकाशित होते हैं। इस प्रकार के प्रकाशनों में विशेष घटित घटनाओं, तथ्यों, आंकड़ों तथा विकास कार्यों आदि से संबंधित सूचना

का संग्रह होता है। विभिन्न विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में एक वर्ष में हुए विकास कार्यों की प्रगति समीक्षा के रूप में प्रकाशित होती है। इसके उदाहरण निम्नलिखित हैंः–

1. विज्ञान–तकनीकी की वार्षिकी
2. कम्प्यूटर वार्षिकी आदि।

संदर्भ ग्रंथ

1. *अरिहंत पब्लिकेशंस*
2. *विकी पीडिया डॉट कॉम*